P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

'ओमकार' अनाहत नाद

सारांश

ओमकार नाद ही है वह भी अनाहत। अनाहत नाद वह नाद होता है जो बिना किसी आहत के उत्पन्न हुआ हो। इसके अतिरिक्त सभी ध्वनियाँ दो वस्तुओं के आहत से, टकराहट से पैदा होती हैं, जैसे ताली की ध्वनि। दोनों हथेलियों का आहत है, घण्टे के ध्वनि दो धातुओं की टकराहट है, लेकिन ओमकार अनाहत है, जिसमें कुछ भी आहत नहीं। मुख के अवयव और अधरों के प्रयास सहित उच्चरित ओमकार ध्वनि कृत्रिम मात्र होगी। विशुद्ध नाद नहीं होगा।ओमकार ध्वनि–तरंगे अपने केन्द्र से जितने वृत्त में प्रसारित होती हैं वह वर्तुल सकारात्मक उर्जा से भर जाता है और उसके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक जीव की नकारात्मकता सहज तिरोहित हो जाती है।

शशिवल्लभ शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अम्बाह, मुरैना

मुख्य शब्द : ओमकार, अनाहत, नाद, ईश्वरीय, अर्थातीत, ओमनीप्रजेंट, ओमनीपोटेंट, ओमनीसाइंट, ऊँ, ब्रह्माण्ड, महामंत्र इत्यादि।

प्रस्तावना

एक साधारण मनुष्य जिसके बल पर दिव्य शक्तियों को प्राप्त कर लेता हो, जिसकी अल्प साधना मात्र से ईश्वरीय शक्तियाँ जिसके समक्ष उपस्थित हो जाती हों, तन के तार जिसकी नाद से झंकृत होने लगते हों, ब्रह्माण्ड की शक्तियाँ अष्ट सिद्धियों की तरह जब सहज प्राप्त होने लगती हों तब संसार उस दिव्यता के समक्ष नतमस्तक हो जाता है। वह एक मात्र नाद है, एक ध्वनि है, जिसे एक शब्द दिया गया ओमकार। ''नाद का मुख्य अर्थ है आवाज। परन्तु हमारे यहाँ के आध्यात्मिक और दार्शनिक क्षेत्रों में ब्रह्म के स्वरूप और सृष्टि का मूल प्रवर्तक माना गया है। कहा गया है कि आरंभिक शून्य में एक प्रबल विस्फोट हुआ जिसके नाद से सृष्टि के आरंभिक रूप की रचना हुई। हठ योग में कहा गया है कि मनुष्य की अंतरात्मा में निरन्तर एक प्रकार का सूक्ष्म शब्द होता गँजतू रहता है जो वस्तुतः ब्रह्म का अंश है। एकाग्रचित होकर बराबर अभ्यास करते रहने पर जब नाद सुनाई पड़ने लगता है तब ब्रह्म से साक्षात्कार होता है।''[1] विभिन्न विद्वानों ने ओमकार को प्रणव का पर्याय शब्द माना है और ''त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के रूप में स्वीकार किया है।''[2] ''ओऊम्, ओंकार,ब्रह्म, ईश्वर। पवित्र घोष अथवा शब्द प्रतीक पवित्र अक्षर है। यह शब्द ब्रह्म का बोधक है। ब्रह्म से ही विश्व उत्पन्न होता है। ब्रह्म में ही स्थित रहता है और अंत में ब्रह्म में ही लय हो जाता है। इस प्रकार ऊँ सम्पूर्ण विश्व की अभिव्यक्त, स्थिति, और प्रलय का द्योतक है।''[3] ओम् के रूप में स्पष्ट करते हुए वामन शिवराम आप्टे ने अपने संस्कृत हिन्दी शब्द कोश में लिखा है कि ''ओम् पावन अक्षर है जो वेद–पाठ के आरंभ और समाप्ति पर किया गया पावन उच्चारण या मंत्र के आरंभ में बोला जाता है।''[4]

ओमकार शब्द नहीं है; हो ही नहीं सकता, क्यों कि शब्द का अर्थ होता है लेकिन ओमकार अर्थातीत है, अर्थ से परे है। मनुष्य संसार और संसार से इतर को समझने के लिए शब्दों का सहारा लेता है, इसलिए हमने इसे भी एक संज्ञा दे दी ओमकार। किन्तु इसे शब्द कहना कदापि सार्थक न होगा। ओमकार नाद ही है वह भी अनाहत। अनाहत नाद वह नाद होता है जो बिना किसी आहत के उत्पन्न हुआ हो। इसके अतिरिक्त सभी ध्वनियाँ दो वस्तुओं के आहत से, टकराहट से पैदा होती हैं, जैसे ताली की ध्वनि। दोनों हथेलियों का आहत है, घण्टे के ध्वनि दो धातुओं की टकराहट है, लेकिन ओमकार अनाहत है, जिसमें कुछ भी आहत नहीं। मुख के अवयव और अधरों के प्रयास सहित उच्चरित ओमकार ध्वनि कृत्रिम मात्र होगी। विशुद्ध नाद नहीं होगा। ओमकार ध्वनि–तरंगे अपने केन्द्र से जितने वृत्त में प्रसारित होती हैं वह वर्तुल सकारात्मक उर्जा से भर जाता है और उसके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक जीव की नकारात्मकता सहज तिरोहित हो जाती है। यही कारण है कि भारत में सिंह और मृग एक घाट पर पानी पीते थे। भारत में कई धर्म पैदा हुए। मत मतान्तर को लेकर भेद हुए, इष्ट को लेकर मतैक्य नहीं रहे किन्तु ओमकार पर कोई भेद नहीं

क्यों कि उन्हें पता है कि यही है जो सत्य है ईश्वर से मिलन का माध्यम है, अज्ञान के तम को तिरोहित करने वाला प्रकाश पुंज है। ओमकार सब के लिए ग्राह्य है, स्वीकृति है सहमति है, शक्ति का आधार है। यहाँ कोई विरोध नहीं। ओमकार महामंत्र है शेष सभी मंत्र हैं इसीलिए सभी मंत्रों से पूर्व ओमकार का आदर है। ओमकार सूर्य–आभा है, खिलते पुष्पों का सौरभ है, मकरंद है, सृष्टि का प्राण है, चर–अचर में विद्यमान है।

लोग धर्म के नाम पर विभाजित हो गए किंतु अपने अंहकार को बनाए रखने के लिए ओमकार के मूल को न पकड कर उसके स्वरूप को बदल कर स्वीकार करते गए क्यों कि उन्हें पता है कि यही वो चिंगारी है जिससे अज्ञान की कोठरी में ज्ञान का दीपक जलाया जा सकता है। आचार्य रजनीश ओशो ने ''ओमकार का विश्लेषण करते हुए लिखा कि मुसलमान अपनी इबादत के अंत में एक शब्द का उच्चारण करते है, आमीन। इसके उच्चारण किए बगैर उनकी इबादत पूर्ण नहीं होती। ये आमीन क्या है? ओम् का ही रूप है। अंग्रेजी में तीन शब्द हैं ओमनीप्रजेंट, ओमनीपोटेंट, ओमनीसाइंट। अंग्रेजी भाषाविद् बड़ी कठिनाई में पड़ते हैं क्यों कि वे इन शब्दों का मूल नहीं खोज पाते। ये शब्द बड़े अनूठे हैं। ओमनीसाइंट का अर्थ होता है जिसने सब देख लिया, लेकिन ओम कहाँ से आता है, वह ओम् का ही रूप है। जिसने ओम देख लिया उसने सब देख लिया। ओमनीप्रजेंट का अर्थ है, जो सब जगह मौजूद है लेकिन ओमन कहाँ से आता है? वह ओम का ही रूप है। ओमनीपोटेंट का अर्थ है जिसके पास सारी शक्ति है। लेकिन मतलब इतना ही है जिसके पास ओम की शक्ति है जिसने ओम को पा लिया, सब पा लिया। जो ओम में डूब गया, वह सर्वशक्तिशाली हो गया। ये ओम बड़ा अनूठा शब्द है।''[5] नानक ने कहा एक ओमकार सतनाम। ओमकार एक मात्र ध्वनि है जो पैदा नहीं हुई। सम्पूर्ण संसार इसमें समा जाता है। कृष्ण कहते हैं कि जिस दिन कोई तरंग नहीं उठेगी, सब शून्य होगा, उस दिन यही ओम की ध्वनि सुनी जाएगी। वह ध्वनि मैं ही हूँ। जब कुछ नहीं बचता तब मैं ही बचता हूँ।

ऊँ का वैशिष्ट्य– समस्त शास्त्रों के मूल में वेद हैं और वेदों का आधार ऊँ है। ओमकार वह शक्तिशाली मंत्र है जो तंत्र, मंत्र और यंत्र के पूर्व आकर उसकी शक्ति को गुणात्मक कर देता है। सनातन हिन्दू संस्कृति में पूजापाठ में भोजपत्र, ताम्रपत्र, पूजा स्थल, दीवारों पर ऊँ अंकित करते हैं। किसी भी मंत्र के उच्चारण से पूर्व, हिन्दू धर्म में ऐसा कोई मंत्र नहीं जिसके आरंभ में ऊँ का उच्चारण ना हो। गायत्री मंत्र, शिव मंत्र, महामृत्युंजय जैसे अनेकानेक मंत्रों के प्रयोग सर्वत्र सहज सुने जासकते हैं। यज्ञ में आहुतियाँ देते समय मंत्रोच्चरण से पूर्व ओमकार की ध्वनि का प्रयोग होता है। शिव साधना में ऐसी मान्यता है कि बेलपत्र पर चंदन से ऊँ लिख कर शिवलिंग पर चढ़ाने से शिव जी प्रशन्न होते हैं। महर्षि पतंजलि के आष्टांग योग में शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के लिए आसन और प्राणायाम का महत्व है वहाँ भी प्रायः सभी प्राणायाम में ओमकार का गुंजार होता है। ''महर्षि पतंजलि कहते हैं '' तस्य वाचकः प्रणवः। ऊँकार परमात्मा का वाचक है। धन्वंतरि महाराज कहते है कि ऊँ सबसे उत्कृष्ट मंत्र है। वेदव्यास जी कहते है कि मंत्राणां प्रणवः सेतुः। प्रणव मंत्र सभी मंत्रों का सेतु है। ''ऊँकार मंत्र में 19 शक्तियाँ विद्यमान हैं। 1–रक्षण शक्तिः सहित मंत्र का जप करते हैं तो वह हमारे जप तथा पुण्य की रक्षा करता है। 2– गति शक्तिः जिस योग, ज्ञान, ध्यान के मार्ग से आप फिसल गये थे, जिसके प्रति उदासीन हो गये थे, किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये थे उसमें मंत्रदीक्षा के बाद आपके अंदर की गति शक्ति कार्य में आपको मदद करने लगती है। 3–कांति शक्तिःमंत्रजप से जापक के कुकर्मों के संस्कार नष्ट होने लगते हैं और उसका चित्त उज्ज्वल होने लगता है। उसकी आभा उज्ज्वल होने लगती है, उसकी मति–गति उज्ज्वल होने लगती है और उसके व्यवहार में उज्ज्वलता आने लगती है। 4–प्रीति शक्तिःज्यों–ज्यों आप मंत्र जपते जायेंगे त्यों–त्यों मंत्र के देवता के प्रति मंत्र के ऋषि के प्रति, मंत्र के सामर्थ्य के प्रति आपकी प्रीति बढ़ती जायेगी। 5–तृप्ति शक्तिःज्यों–ज्यों आप मंत्र जपते जायेंगे त्यों–त्यों आपकी अंतरात्मा में तृप्ति बढ़ती जायेगी, संतोष बढ़ता जायेगा। 6–अवगम शक्तिः मंत्रजप से दूसरों के मनोभावों को जानने की शक्ति विकसित हो जाती है। दूसरे मनोभावों, भूत–भविष्य के क्रियाकलाप को आप अंतर्यामी बनकर जान सकते हो। कोई कहे कि 'महाराज! आप तो अंतर्यामी है।' किंतु वास्तव में यह भगवत्शक्ति के विकास की बात है। 7–प्रवेश अवति शक्तिःअर्थात् सबके अंतरतम की चेतना के साथ एकाकार होने की शक्ति। 8– श्रवण शक्तिःमंत्रजप के प्रभाव से जापक सूक्ष्मतम, गुप्ततम शब्दों का श्रोता बन जाता है। 9– स्वाम्यर्थ शक्तिःअर्थात् नियमन और शासन का सामर्थ्य। नियामक और शासक शक्ति का सामर्थ्य विकसित करता है प्रणव का जप। 10– याचन शक्तिःयाचक की लक्ष्यपूर्ति का सामर्थ्य देने वाले मंत्र। 11– क्रिया शक्तिःनिरंतर क्रियारत रहने की क्षमता, क्रियारत रहने वाली चेतना का विकास। 12– इच्छित अवति शक्तिःवह स्वरूप परब्रह्म परमात्मा स्वयं तो निष्काम है किंतु उसका जप करने वाले में सामने वाले व्यक्ति का मनोरथ पूरा करने का सामर्थ्य आ जाता है। 13– दीप्ति शक्तिःकार जपने वाले के हृदय में ज्ञान का प्रकाश बढ़ जायेगा। उसकी दीप्ति शक्ति विकसित हो जायेगी। 14– वाप्ति शक्तिःअणु–अणु में जो चेतना व्याप रही है उस चैतन्यस्वरूप ब्रह्म के साथ आपकी एकाकारता हो जायेगी।15– आलिंगन शक्तिःअपनापन विकसित करने की शक्ति। ओकार के जप से पराये भी अपने होने लगेंगे तो अपनों की तो बात ही क्या। 16– हिंसा शक्तिःकार का जप करने वाला हिंसक बन जायेगा ? हाँ, हिंसक बन जायेगा किंतु कैसा हिंसक बनेगा ? दुष्ट विचारों का दमन करने वाला बन जायेगा और दुष्ट वृत्ति के लोगों के दबाव में नहीं आयेगा। अर्थात् उसके अंदर अज्ञान को और दुष्ट संस्कारों को मार भगाने का प्रभाव विकसित हो जायेगा। 17– दान शक्तिःवह पुष्टि और वृद्धि का दाता बन जायेगा। फिर वह माँगने वाला नहीं रहेगा, देने की शक्तिवाला बन जायेगा। वह देवी देवता से, भगवान से माँगेगा नहीं, स्वयं देने लगेगा।18– भोग शक्तिःप्रलयकाल स्थूल जगत को अपने जगत में लीन करता है, ऐसे ही

तमाम दुःखों को, चिंताओं को, खिंचावों को, भयों को अपने में लीन करने का सामर्थ्य होता है।''[6]

माण्डूक्योपनिषद् में भी ओमकार/प्रणव / ओम् अक्षर का जो विश्लेषण किया गया है वहाँ भी ओमकार को ब्रह्म माना।

ओमित्येतदक्षरमिदँ सर्व तस्योपव्याख्यानं भूतं
भवद्भविष्यदिति सर्वमोंकार एव।
यच्चान्यत् त्रिकालातीतं तदप्योंकार एवं। [7]

ऊँ अक्षर को अविनाशी परमात्मा स्वीकारा है। ब्रह्म के पूर्ण रूप का तत्व समझाने के लिए प्रणव की अ, उ, म तीनों मात्राओं के साथ और मात्रा के रहित ब्रह्म परमात्मा के एक–एक पाद की रचना की गयी है। जो तीनो कालों से भिन्न है वही ओमकार है। कारण, सूक्ष्म और स्थूल, इन तीनों भेदों वाला जगत् और इसको धारण करने वाले इस अंश की अभिव्यक्ति होती है मात्र उतना ही परमात्मा का स्वरूप नहीं है वल्कि उससे भी अलग है।

सेऽयमात्माध्यक्षरमोंकारोऽधिमात्रं पादा मात्रा
मात्राश्च पादों अकार उकार मकार इति। [8]

इस जगत में ब्रह्म से इतर कुछ भी नहीं है। समग्र ब्रह्म है, ब्रह्म सभी में समाविष्ट है। सब ब्रह्म में समाहित है।

परमपिता परमात्मा जिसे चार पदों का वर्णन किया गया है। यहाँ अक्षर तीन मात्राओं वाला ओंकार है अ, उ, और म।

ये तीनों मात्राएँ ब्रह्म के तीन पाद हैं और तीनों पाद ही ओंकार की तीन मात्राएँ हैं। ओंकार अपनी तीन मात्राओं से जिस प्रकार अलग नहीं है। उसी प्रकार परमात्मा अपने पादों से अलग नहीं है।

स्वदेहमरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिम्।
ध्याननिर्मथनाभ्ययसाद् देवं पश्येन्निगूढवत्।।[9]

अग्नि प्रज्ज्वलित करने के लिए जिस तरह दो अरणियों को घर्षण कराया जाता है उसी प्रकार अपने शरीर में परमात्मा को प्राप्त करने के लिए शरीर को नीचे की अरणि[10] और ओमकार को ऊपर की अरणि बनाकर सतत उच्चारण करना चाहिए। इस प्रकार ध्यान मंथन के अभ्यास से साधक को परमात्मा की प्राप्ति होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

हिन्दी में भक्ति काल को हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्ण युग की संज्ञा दी गयी है। भक्ति काल में जो भी साहित्य लिखा गया वह ईश्वरीय आस्था, भक्ति, और इष्ट की वन्दना का आधार है यह आधार संस्कृत के वेद, पुराणों, स्मृतियों के श्लोकों, और मंत्रों की सरल व्याख्या है और मंत्रों के पूर्व में ओमकार का प्रयोग होता है। इसी ओम को और अधिक नये अर्थों में इस शोध पत्र के माध्यम से समझने का प्रयास है।

निष्कर्ष

अंततः एक ही बात सीखने की है, समझने की है, विचारने की है, उतारने की है– ओमकार प्राणों से उठने वाली वह अलौकिक गूँज है, जिसके गुँजार से तन के तार वीणा के तारों की भाँति झंकृत होने लगते हैं। सामवेद का संगीत और दीपक राग स्वतः आरम्भ हो जाता है। ओमकार अनाहत नाद है। यह नाद अल्प साधना से ही स्वतः ही सुनायी देने लगता है। ओम के उच्चारण से पूर्व इंसान श्वास अधिक मात्रा में खींचता है तो भीतर जाने वाली प्राणवायु भीतर की तमाम विषैली वायु का उच्चारण करते समय बाहर निकालता है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद है। आओ हम मिलकर आह्वान करें उस तत्व का उस अस्तित्व का उस रकार का, अकार का, मकार का और ओमकार का।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शब्दार्थ – विचार कोश, आचार्य रामचन्द्र वर्मा पृष्ठ 313*
2. *मानक हिन्दी कोश, तीसरा खण्ड, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग पृष्ठ 598*
3. *हिन्दी विश्वकोश भाग 18, पृष्ठ 6545*
4. *संस्कृत हिन्दी शब्द कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृष्ठ 230*
5. *ओशो वर्ल्ड नवंबर 2016*
6. *www.santasharam.org/2014/omkar-ki-19-shaktiyan*
7. *ईशादि नौ उपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद् पृ 257*
8. *ईशादि नौ उपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद् पृ 266*
9. *ईशादि नौ उपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद् पृ 419*
10. *अरणि–काष्ठ विशेष, जिसे घिसकर आग निकालते हैं। हिन्दी विश्व कोश पृ. 969*